ICSSR Sponsored

ISSN: 2319-9997

Journal of Nehru Gram Bharati University, 2024; Vol. 13 (2):104-108

ऑनलाइन माध्यम से पर्यावरण शिक्षा एवं जन जागरूकता

नीतू तिवारीं, शिखा खरे एवं मोनिका गुप्ता

गृह विज्ञान विभाग, नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, जमुनीपुर, प्रयागराज

Received: 20.09.2024 *Revised:* 20.11.2024 *Accepted:* 06.12.2024

सारांशः

ऐसी शिक्षा जो मनुष्य को पर्यावरण के प्रति उचित समझ, संवेदनशीलता तथा सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करने के साथ–साथ पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जन जागरूकता फैलाने का कार्य करे, पर्यावरण शिक्षा कहलाती है। मानव एवं पर्यावरण का सम्बन्ध अटूट तथा विकास से आबद्ध रहा है, और विकास की यह प्रक्रिया निरन्तर मानव सम्बन्धों को आज भी जोडे हुए है, भारत में प्राचीन काल से ही पर्यावरण के तत्वों को समुचित महत्व दिया गया है। जिसका प्रमाण भारतीय धर्म ग्रन्थों से प्राप्त होता है। पर्यावरण वह प्रवृत्ति है जो मानव को चारों ओर से घेरे हुए है तथा उनके जीवन तथा क्रियाओं पर प्रभाव डालती है। शिक्षा शब्दकोष में वेब्सटर ने ''प्राणी अथवा प्राणी समूह को प्रभावित करने वाली वाहां परिस्थितियों एवं प्रभावों के समग्र को पर्यावरण की संज्ञा दी है।'' आज के बदलते हुए आधुनिक परिवेश में पर्यावरण शिक्षा एवं जन जागरूकता के प्रति आनलाइन संचार माध्यम से ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में लोगों का पर्यावरण क्षरण से पड़ने वाले प्रभाव एवं दुष्परिणामों के प्रतिसजग कराया जा सकता है। क्योंकि दुनिया भर के सभी समस्याओं में से पर्यावरण क्षरण (हास) सबसे महत्वपूर्ण एवं गम्भीर मुद्दा है। हमारा स्वस्थ्य जीवन बनाये रखने के लिए हमें सर्व प्रथम आवश्यकता है पर्यावरण संरक्षण के प्रति विशेष ध्यान दे।

मुख्य बिन्दुः ऑनलाइन शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, जन जागरूकता।

परिचयः

मानव जीवन के उन सभी बाहरी दशाओं और प्रभावों का जो योग बनता है वह प्राणियों के जीवन और विकास पर प्रभाव डालता है। पर्यावरण अपना प्रभाव प्रत्येक जीव जगत पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपना प्रभाव डालता है। पर्यावरण शब्द अंग्रेजी में "इनवायरमेन्ट" शब्द की उत्पत्ति फ्रेंच भाषा के शब्द "इनवायरोनर" शब्द से हुई है। जिसका अर्थ है घेरना अर्थात् वह घेरा जो चारो ओर से ढका है तथा मानव जीवन के प्रत्येक क्रियाओं पर प्रभाव डालती है। सामान्य रूप से पर्यावरण के विभिन्न पक्षों को तकनीकी एवं आनलाइन (इण्टरनेट) माध्यम से फैलाना ही पर्यावरण जन जागरूकता कहा जाता है किन्तु पर्यावरण का क्षेत्र बहुआयमी है अत्यन्त

व्यापक होने के कारण पर्यावरण शिक्षा महत्वपूर्ण एवं व्यापक हो गया है।

संयुक्त राज्य अमेरिका पर्यावरण शिक्षा अधिनियम (1970) के अनुसार "पर्यावरण शिक्षा वह प्रक्रिया से है जो मानव के प्रकृति तथा मानव निर्मित वातावरण से सम्बन्धित है। इसमें जनसंख्या प्रदूषण संसाधनों का विनियोजन एवं निःशेषण, संरक्षण, यातायात प्रद्यौगिकी के सम्बन्ध भी निहित है।" यूनेस्को जामी (फिनलैण्ड) में आयोजित फिनिश नेशनल कमीशन की संगोष्ठी (1976) के अनुसार "पर्यावरण शिक्षा पर्यावरणीय संगरक्षण के लक्ष्यों को लागू करने का एक ढंग है यह विज्ञान कि पृथक शाखा या कोई पृथक अध्ययन विषय नहीं है। इसको जीवन पर्यन्त एकीकृत शिक्षा के सिधान्तों के रूप में लागू किया जाना चाहिए।"

प्रकृति तथा प्राकृतिक संसाधनों के संगरक्षण के अर्न्तराष्ट्रीय संघ के अनुसार "पर्यावरण शिक्षा पर्यावरणीय दायित्वों को जानने तथा विचारों को स्पष्ट करने की वह प्रक्रिया है जिसमें मनुष्य अपनी संस्कृति और जैव भौतिक परिवेश के मध्य अपनी सम्बद्धता को पहचानने और समझने के लिए आवश्यक कौशल एवं अभिवृत्ति का विकास कर सके।"

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद (छब्म्त्ज्) के अनुसार ''पर्यावरण शिक्षा का अर्थ बालकों में उनके लिए निकट तथा दुरूस्थ समय एवं स्थान से सम्बन्ध सम्पूर्ण भौतिक सामाजिक वातावरण के सम्बन्ध में संज्ञान एवं चेतना विकसित करना है।''

सभी परिभाषाओं के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि पर्यावरण शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली एकीकृत शिक्षा का ही रूप है वास्तव में पर्यावरण शिक्षा एक प्रक्रिया है जिससे मनुष्य में पर्यावरण के प्रति जागरूकता, ज्ञान, कौशल तथा मूल्यों को विकसित किया जाता है जिसमें पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं से निपटने में सक्षम हो सके। विश्व की सभी समस्याओं में पर्यावरण हास सबसे महत्वपूर्ण एवं विचारणीय मुद्दा है। पर्यावरण संरक्षण एवं पर्यावरण के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाने में अहम भूमिका निभाने के साथ–साथ आने वाली पीढ़ियों के भविष्य बनाने में सहयोग कर पर्यावरण क्षरण को रोकना हम सभी के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए इसलिए सभी को पर्यावरण पर पड़ने वाले क्षरण प्रभावों से उत्पन्न परिणामों के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए। यह कई तरीकों से किया जा सकता है जैसे समाचार पत्र रेडियो, टेलिविजन जो जनता को सबसे ज्यादा प्रभावित करता है इसी के साथ आनलाइन तकनीकी माध्यम से मिडिया का उपयोग।

प्राकृतिक संसाधनों के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करने में मिडिया का अहम भूमिका होती है, पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 में पर्यावरण को परिभाषित करते हुए कहा गया है–''पर्यावरण में पानी (जल) वायु तथा भूमि तथा उनके मध्य सम्बन्ध विद्यमान है और दूसरी ओर मानवी प्राणी, अन्य जीवित प्राणी पौधे एवं सूक्ष्म वायु सम्मिलित है।'' पर्यावरण संरक्षण एवं जन जागरूकता में ऑनलाइन (इलेक्ट्रॉनिक) मिडिया का महत्वपूर्ण योगदान है इसके अन्तर्गत रेडियो, टेलिविजन, आडियो, विडियो स्लाइड आदि महत्वपूर्ण है। इस प्रकार आनलाइन मिडिया एवं तकनीकी का उपयोग करके लोगों को पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूक बनाया जा सकता है। वर्तमान समय में मीडिया एवं तकनीकी का मानव–जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रभाव दिखाई दे रहा है। पर्यावरण संरक्षण एवं जन जागरूकता शिक्षा पर भी इसका प्रभाव निश्चित रूप

से पड़ा है।

साहित्य पुनरावलोकन

टमी एट अल. (2017) के अनुसारः– पर्यावरण शिक्षा में ऐसे दृष्टिकोण, उपकरण और कार्यक्रम शामिल है जो पर्यावरण से सम्बन्धित दृष्टिकोण, मूल्य, जागरूकता ज्ञान और कौशल का विकास और समर्थन करते है जो लोगों को पर्यावरण की ओर से सूचित कार्यवाही करने लिए तैयार करते है। मोनरो और क्रेसी (2016) यूनेस्को 1978 व्यवहारिक जटिलता के सामने लाने वाले अनुसन्धान के बढ़ते निकाय के आधार पर्यावरण शिक्षा पर्यावरणीय दृष्टिकोण से ज्ञान और फिर कार्यवाही तक रेखीय मार्ग का सुझाव देने से दूर हो गई। अर्दोइन एट अल. (2015) ने पाया कि इच्छित परिणामों में पर्यावरण जागरूकता दृष्टिकोण कौशल और व्यवहार शामिल है जिसमें नागरिक भागीदारी भी शामिल है।

स्टर्न एट अल. (2014) ने युवा पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रमों का मूल्यांकन करने वाले 66 अध्ययनों की समीक्षा की जिसमें ज्ञान जागरूकता कौशल दृष्टिकोण, इरादे व्यवहार के परिणामों के साथ–साथ सकरात्मक सम्बन्ध पाये गये। थामस एट अल (2018) ने उन पर्यावरणीय मुद्दों के बीच बेहतर सम्बन्धों की आवश्यकता पर भी चर्चा कि जिन्हें कार्यक्रम में सम्बोधित किया। पर्यावरण शिक्षा में ज्ञान कौशल एवं बोध, विश्वास के साथ–साथ इसका का सम्बन्ध पर्यावरण के सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक दोनों पक्षों से होता है जिससे पर्यावरण प्रदूषण को रोका जा सके और असंतुलन को दूर किया जा सके।

ऑनलाइन शिक्षा (तकनीकी) के माध्यम से पर्यावरण शिक्षा एवं जन जागरूकता

पर्यावरण शिक्षा एवं जन जागरूकता के सन्दर्भ में मिडिया, तकनीकी एवं ऑनलाइन शिक्षा एक दूसरे के पूरक है मिडिया का प्रसार तकनीकी द्वारा ही सम्भव है, यदि दोनों को सम्मिलित रूप से प्रयोग किया जाय तो पर्यावरण शिक्षा एवं जन जागरूकता में व्यापक प्रभाव पड़ सकता है। पर्यावरण संगरक्षण एवं पर्यावरण प्रबन्धन के माध्यम से पर्यावरणीय जागरूकता एवं पर्यावरण शिक्षा में व्यापक चेतना उत्पन्न करने में सूचना तकनीकी उल्लेखनीय भूमिका निभा सकता है सूचना तकनीकी का लक्ष्य एवं उद्देश्य पर्यावरणीय समस्याओं के निराकरण के उद्देश्य से व्यक्ति को समझ विवेक व्यवहारिक ज्ञान कौशल प्रदान तथा राष्ट्र, देश एवं समाज में व्यक्ति के प्रति न केवल जागरूकता बल्कि चेतना एवं रूचि पर्यावरण शिक्षा एवं जन जागरूकता के लिए सबसे लोक प्रिय माध्यम टेलिविजन है नई इलेक्ट्रॉनिक ऑनलाइन संचार व्यवस्था और कम्प्यूटरी करण ने मिडिया को एक नया आयाम दिया। आधुनिक तकनीकी समाज में सबसे व्यापक रूप से स्वीकृत प्रतीक अब कम्प्यूटर हो गया है क्योंकि सूचनाओं को एकत्रित करने एवं संग्रीत रूप से संचालित करने में बहुत बड़ा योगदान है।

संचार तकनीकी के साधनों में रेडियो का भी बहुत बड़ा योगदान है आकाशवाणी से विविध प्रकार के प्रसारणों में पर्यावरण संरक्षण एवं जन जागरूकता सम्बन्धी प्रसारण जन मानस तक सूचना पहुँचाने में सहायक रहा है। जैसे–राष्ट्रीय नीति एवं कार्यक्रमों, प्रदूषण निवारण के उपायों, कृषि एवं औद्योगिक विकास, सत्त

विकास और पर्यावरणीय जन जागरूकता के साथ–साथ हरित क्रान्ति को आगे बढ़ाने में रेडियो प्रसारणों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इण्टरनेट तथा मल्टीमीडिया के माध्यम से लोगों को विश्व व्यापक एवं तत्थ्यात्मक जानकारी प्राप्त हो रही है पर्यावरण के विविध पक्षों की जानकारी एवं आकड़े (आनलाइन) इण्टरनेट पर आसानी से प्राप्त किये जा सकते है।

आनलाइन तकनीकी का नया क्षेत्र मल्टीमीडिया भी है। इसका उद्देश्य लोगों को नियन्त्रित ढंग से जानकारी, शिक्षा तथा मनोरंजन प्रदान करने के साथ–साथ पर्यावरण सम्बन्धी मुद्दों को जनमानस तक पहुँचाना है। इसमें लेखन सामग्री, ध्वनि विडियों ग्राफिकस एवं ऐनीमेशन सम्मलित है इसके माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना जागृत करना आसान हो जाता है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहा है ज्यादातर देखा जाता है कि प्रकृतीक आपदाओं के समय आनलाइन माध्यम से सोशलमिडिया का काफी हद तक भागीदारी रहती है।

बाढ़, भूकम्प, सुनामी आदि की स्थिति में टेलीफोन सेवा बन्द होने के बाद, शीघ्र सम्पर्क स्थापित करने में कई परेशानिया आ जाती है। ऐसी परिस्थिति में इण्टरनेट की उपलब्धता अप्रभावित रहती है तथा उसके माध्यम से दुनिया के किसी भी कोने में संचार स्थापित किया जा सकता है। 2011 में आये भूकम्प एवं सुनामी में सोशल (आनलाइन माध्यम) मिडिया की उपयोगिता साबित हुई संकट के इस घड़ी में दुनिया भर के लोगों के बीच परिवार एवं जान–पहचान वालों से सम्पर्क कर सबसे उत्तम साधन फेसबुक एवं ट्विटर बना, फेसबुक पर लगातार सुनामी सम्बन्धी तस्वीर, विडियों अपलोड किये जा रहे थे, जिससे लोगों के बीच सूचनाओं का वास्तविक समय में सूचित किया जा सके। यूटूब पर लोगों ने सुनामी (प्राकृतिक आपदा) का आँखों देखा हाल अपलोड किया जिससे समाचार संगठनों ने इसे प्रमुखता से प्रसारित किया।

पर्यावरण शिक्षा एवं जागरूकता के प्रति सुझाव

पर्यावरण शिक्षा एवं जन जागरूकता फैलाने में आनलाइन माध्यम से सोशल मिडिया एवं अनेक तकनीकी संसाधनों का अह्म भूमिका है। फिर भी पर्यावरण शिक्षा को जनजन तक पहुँचाने के लिए प्रत्येक नागरिक का उत्तरदायित्व होना चाहिए। पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षित एवं साक्षर बनाने हेतु पर्यावरण एवं जनजागरूकता के प्रति टेली क्रान्फन्सिक तकनीकी का प्रयोग करना चाहिए ताकि दूर दराज के क्षेत्रों तक पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का विकास किया जा सके और साथ ही विश्व भर के लोगों तक पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम फैलाया जा सके एवं सूचना पर्यावरण के प्रति अविष्कारात्मक चिन्तन का विकास किया जाना चाहिए, जिससे पर्यावरण सम्बन्धी प्रभावशाली सम्प्रेषण विकसित करने के साथ–साथ पर्यावरण जागरूक कार्यक्रमों को सफल पूर्वक संचालित करने में सहायता मिल सके। विभिन्न दृश्य श्रृत्य सामग्रीयों जैसे–विडियो, टेलिविजन, बहुमाध्यम कम्प्यूटर, साफ्टवेयर एवं रंगीन चलचित्रों के माध्यम से पर्यावरणीय विज्ञान से सम्बन्धित विभिन्न प्रकरणों का ज्ञान दिया जाना चाहिए और इसके अलावा शैक्षिक दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रमों का पुनावृत्ति एवं पुर्नवलन का प्रयोग करते हुए जन मानस तक पर्यावरण जागरूकता, संरक्षण तथा पर्यावरणीय चेतन से सम्बन्धित ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए इसके

अलावा आनलाइन ट्यूटोरियल की भी व्यवस्था करने के साथ–साथ दूरभाष, फैक्स, ईमेल आदि तकनिकों के द्वारा पर्यावरण से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर चर्चा तथा अन्तः क्रिया विद्वावानों के माध्यम से कराना चाहिए, आनलाइन शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण शिक्षा से सम्बन्धित विषयों का मूल्यांकन सरलता से करने आसानी होती है एवं पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्र में आनलाइन मिडिया एवं तकनीकी एक–दूसरे के पूरक है। समयानुसार विभिन्न उपागमों का प्रयोग करके पर्यावरण सम्प्रेषण को सक्रीय बनाया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

डा0 राखी उपाध्याय, एसोसिएट प्रोफेसर पी0जी0, कालेज, देहरादून, उत्तराखण्ड, "पर्यावरण जागरूकता में सूचना तकनीकी की भूमिका"

जैनेन्द्र सिंह, असिसटेंट प्रोफेसर (शिक्षाशास्त्र) कॅरियर कालेज आफ मैनेजमेन्ट एण्ड एजुकेशन, लखनऊ, "पर्यावरण शिक्षा में मिडिया एवं तकनीकी का उपयोग"।

लक्ष्मी राठौर स.स.ठ. 15 फरवरी 2022 सुशांत यूनिर्वसिटी द्वारा "पर्यावरण के बारे में जन जागरूकता"।

राकेश शर्मा निरीथ ग्वालियर टाइम्स, "पर्यावरण संरक्षण में मिडिया की भूमिका"

प्रो0 बाबूलला बलवंत एम.ए. (स्वर्णपदक प्राप्त) एम.एड. "पर्यावरण शिक्षा एवं जनसंख्या शिक्षा।"

डा0 आर0ए0 शर्मा "शिक्षा के तकनीकी आधार"।

डा0 सीमा द्विवेदी "मानव तथा पर्यावरण के मध्य सम्बन्धः जागरूकता और पर्यावरण संगरक्षण में मिडिया का प्रयोग व वैश्विक राष्ट्रीय और स्थानीय पर्यावरणीय मुद्दों का एक अध्ययन।"

Disclaimer/Publisher's Note:

The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.